

विवाह और जीवनसाथी

मैं प्रेमपूर्वक अतीत की सभी बातों को क्षमा करता/करती हूँ और उन्हें मुक्त करता/करती हूँ। मैं अपने संसार को आनंद, शांति, साथ, सहभागिता और वैवाहिक जीवन से भरने का चुनाव करता/करती हूँ।

मैं स्वयं से प्रेम करता/करती हूँ और स्वयं को ठीक वैसे ही स्वीकार करता/करती हूँ जैसा/जैसी मैं हूँ। मैं ऐसे व्यक्ति को स्वीकार करने के लिए तैयार हूँ जिसकी सोच भी ऐसी ही हो और जो स्वयं को भी वैसे ही स्वीकार करता हो जैसा वह है। हम मिलकर परिवार होने के सार से परिपूर्ण जीवन का सह-निर्माण करते हैं।

मैं स्वयं को विवाह के भय या चिंता को छोड़ने की अनुमति देता/देती हूँ। मैं स्वयं को साहस और करुणा प्रदान करता/करती हूँ ताकि उस मानसिकता को सहजता से छोड़ सकूँ जिसकी अब मुझे आवश्यकता नहीं है।

मैं अब सहजता से वह सब कुछ आत्मसात और ग्रहण करता/करती हूँ जो मुझे जानने की आवश्यकता है, और अपने जीवन में प्रेम, रोमांस और विवाह का स्वागत करने के लिए प्रतिदिन एक-एक कदम आगे बढ़ता/बढ़ती हूँ।

मैं अब जीवन की पूर्ण लय और प्रवाह का एक हिस्सा बनता/बनती हूँ। सब कुछ दिव्य और उचित व्यवस्था के अनुसार है।